हरिहर काका

प्रश्नों के उत्तर -

प्रश्न 1 - कथावाचक और हरिहर काका के बीच क्या सम्बन्ध है और इसके क्या कारण है?

उत्तर - हरिहर काका लेखक को बचपन से ही बहुत ज्यादा प्यार करते थे। वे लेखक को अपने कंधे पर बैठा कर घुमाया करते थे। एक पिता का अपने बच्चों के लिए जितना प्यार होता है, लेखक के अनुसार हरिहर काका का उसके लिए प्यार उससे भी अधिक था। जब लेखक व्यस्क हुआ या थोड़ा समझदार हुआ तो उसकी पहली दोस्ती भी हरिहर काका के साथ ही हुई थी। उससे पहले हरिहर काका की गाँव में किसी से इतनी गहरी दोस्ती नहीं हुई थी। लेखक कहता है कि जब हरिहर काका उसके पहले दोस्त बने तो उसे ऐसा लगा जैसे हरिहर काका ने भी लेखक से दोस्ती करने के लिए इतनी लम्बी उम्र तक इंतजार किया हो। हरिहर काका उससे कभी भी कुछ नहीं छुपाते थे, वे उससे सब कुछ खुल कर कह देते थे। इस तरह हम कह सकते हैं कि लेखक और हरिहर काका का बहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध था।

प्रश्न 2 - हरिहर काका को महंत और अपने भाई एक ही श्रेणी के क्यों लगने लगे?

हरिहर काका एक निः संतान थे। उनके पास पंद्रह बीघे जमीन थी। हरिहर काका के भाइयों ने पहले तो उनकी खूब देखभाल की परंतु धीरे-धीरे उनकी पत्नियों ने काका के साथ दुर्व्यवहार करना शुरू कर दिया। महंत को जब यह पता चला तो वह बहला- फुसलाकर काका को ठाकुरबारी लेआए और वहाँ रखकर उनकी खूब सेवा की। साथ ही उसने काका से उनकी पंद्रह बीघे जमीन ठाकुरबारी के नाम लिखने की बात की। काका ने जब ऐसा करने से मना किया तो महंत ने उन्हें मार-पीटकर जबरन कागज़ों पर अँगूठा लगवा दिया । इस बात पर दोनों पक्षों में जमकर झगड़ा हुआ। दोनों ही पक्ष स्वार्थी थे| हरिहर काका को सुख नहीं दुख देने पर उतारू थे। उनका हित नहीं, अहित करने के पर पक्ष में थे। दोनों का लक्ष्य जमीन हथियाना था। इसके लिए दोनों ने ही काका के साथ छल व बल का प्रयोग किया। इसी कारण हरिहर काका को अपने भाई और महंत एक ही श्रेणी के लगने लगे।

प्रश्न 3 - ठाकुरबारी के प्रति गाँव वालों के मन में अपार श्रद्धा के जो भाव हैं उससे उनकी किस मनोवृति का पता चलता है?

उत्तर - गाँव के लोगों को भोला और अंधविश्वासी मनोवृति का माना जाता है क्योंकि गाँव के ज्यादातर लोगों का विश्वास यह बना होता है कि अगर उनकी फसल अच्छी हुई है तो उसे वे अपनी मेहनत नहीं बल्कि भगवान की कृपा मानते हैं। किसी की मुक़दमे में जीत होती है तो उसका श्रेय भी भगवान को दिया जाता है। लड़की की शादी अगर जल्दी तय हो जाती है तो भी माना जाता है कि भगवान से मन्नत माँगने के कारण ऐसा हुआ है। अपनी ख़ुशी से गाँव के लोग भगवान को बहुत कुछ दान में देते हैं, कुछ तो अपने खेत का छोटा-सा भाग भगवान के नाम कर देते हैं। इसी बात का फायदा महंत-पुजारी और साधु-संत लोग उठाते हैं जो ठाकुरबारी के नाम पर और भगवान को भोग लगाने के नाम पर दिन के दोनों समय हलवा-पूड़ी बनवाते हैं और आराम से पड़े रहते हैं। सारा काम वहाँ आए लोगों से सेवा करने के नाम पर करवाते हैं। लोग ठाकुर बारी को पवित्र, निष्कलंक और ज्ञान का प्रतीक मानते हैं।

प्रश्न 4 - अनपढ़ होते हुए भी हरिहर काका दुनिया की बेहतर समझ रखते हैं? कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - जब हरिहर काका के भाइयों ने हरिहर काका को उनके हिस्से की जमीन को उनके नाम लिखवाने के लिए कहा, तो हरिहर काका बहुत सोचने के बाद अंत में इस परिणाम पर पहुंचे कि अपने जीते-जी अपनी जायदाद का स्वामी किसी और को बनाना ठीक नहीं होगा। फिर चाहे वह अपना भाई हो या मंदिर का महंत। हरिहर काका को अपने गाँव और इलाके के वे कुछ लोग याद आए, जिन्होंने अपनी जिंदगी में ही अपनी जायदाद को अपने रिश्तेदारों या किसी और के नाम लिखवा दिया था। उनका जीवन बाद में किसी कुत्ते की तरह हो गया था, उन्हें कोई पूछने वाला भी नहीं था। हरिहर काका बिलकुल भी पढ़े-लिखे नहीं थे, परन्तु उन्हें अपने जीवन में एकदम हुए बदलाव को समझने में कोई गलती नहीं हुई और उन्होंने फैसला कर लिया कि वे जीते-जी किसी को भी अपनी जमीन नहीं लिखेंगे। इससे पता चलता है कि अनपढ़ होते हुए भी हरिहर काका दुनिया की बेहतर समझ रखते थे।

प्रश्न 5 - हरिहर काका को जबरन उठा ले जाने वाले कौन थे? उन्होंने उनके साथ कैसा बर्ताव किया?

उत्तर - हरिहर काका को जबरन उठा ले जाने वाले महंत के आदमी थे। उन्होंने ठाकुरबारी के एक कमरे में हरिहर काका को हाथ और पाँव बाँध कर रखा था और साथ ही साथ उनके मुँह में कपड़ा ठूँसा गया था ताकि वे आवाज़ न कर सकें। वे लोग काका को उस कमरे में इस तरह बाँध कर कही गुप्त दरवाजे से भाग गए थे और उन्होंने कुछ खाली और कुछ लिखे हुए कागजों पर हरिहर काका के अँगूठे के निशान जबरदस्ती ले लिए थे। परन्तु हरिहर काका दरवाज़े तक लुढ़कते हुए आ गए थे और दरवाज़े पर अपने पैरों से धक्का लगा रहे थे ताकि बाहर खड़े उनके भाई और पुलिस उन्हें बचा सकें।

प्रश्न 6 - हरिहर काका के मामले में गाँव वालों की क्या राय थी और उसके क्या कारण थे?

उत्तर - कहानी के आधार पर गाँव के लोगों को न तो महंत जी ने कुछ बताया था और ना ही हरिहर काका के भाइयों ने कुछ बताया था। उसके बाद भी गाँव के लोग सच्चाई से खुद ही परिचित हो गए थे।गाँव के लोग जानते थे कि हरिहर काका के परिवार वाले हरिहर काका का ध्यान नहीं रखते और इसी वजह से महंत जी हरिहर काका को सुख-समृद्धि का लालच दे कर जमीन ठाकुरबारी के नाम करवाना चाहते थे। यही कारण था कि गाँव वाले दो वर्गों में बाँट गए थे। फिर तो गाँव के लोग जब भी कहीं बैठते तो बातों का ऐसा सिलसिला चलता जिसका कोई अंत नहीं था। हर जगह बस उन्हीं की बातें होती थी। कुछ लोग कहते कि हरिहर काका को अपनी जमीन भगवान के नाम लिख देनी चाहिए। इससे उत्तम और अच्छा कुछ नहीं हो सकता। इससे हरिहर काका को कभी न ख़त्म होने वाली प्रसिद्धि प्राप्त होगी। इसके विपरीत कुछ लोगों की यह राय थी कि भाई का परिवार भी तो अपना ही परिवार होता है। अपनी जायदाद उन्हें न देना उनके साथ अन्याय करना होगा। खून के रिश्ते के बीच दीवार बन सकती है।

प्रश्न 7 - कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि लेखक ने यह क्यों कहा, "अज्ञान की स्थिति में ही मनुष्य मृत्यु से डरते हैं। ज्ञान होने के बाद तो आदमी आवश्यकता पड़ने पर मृत्यु को वरन करने के लिए तैयार हो जाता है।"

उत्तर - जब हरिहर काका के भाई हरिहर काका को धमका रहे थे तो वे बिलकुल नहीं डरे, अगर वे हरिहर काका के अपहरण से पहले उन्हें डराते तो शायद वे डर जाते। हरिहर काका समझ गए थे कि जब मनुष्य को ज्ञान नहीं होता तभी वह मृत्यु से डरता है। परन्तु जब मनुष्य को ज्ञान हो जाता है

तब वह जरूरत पड़ने पर मृत्यु का सामना करने के लिए भी तैयार हो जाता है। हरिहर काका ने सोच लिया था कि उनके भाई उन्हें एक बार ही मार दें तो सही है, लेकिन वे जमीन उनके नाम लिख कर अपनी पूरी जिंदगी घुट-घुट कर नहीं मरना चाहते, यह उन्हें ठीक नहीं लग रहा था। हरिहर काका को अपने गाँव और इलाके के वे कुछ लोग याद आए, जिन्होंने अपनी जिंदगी में ही अपनी जायदाद को अपने रिश्तेदारों या किसी और के नाम लिखवा दिया था। पहले-पहले तो रिश्तेदार बहुत आदर-सम्मान करते हैं, परन्तु बुढ़ापे में परिवार वालों को दो वक्त का खाना देना भी बुरा लगने लगाता है। बाद में उनका जीवन किसी कुत्ते के जीवन की तरह हो जाता है, उन्हें कोई पूछने वाला भी नहीं होता। हरिहर काका अपनी इस तरह की हालत से अच्छा एक बार ही मर जाना सही समझते थे।

प्रश्न 8 - समाज में रिश्तों की क्या अहमियत है? इस विषय पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर - समाज में सुखी जीवन जीने के लिए रिश्तों-नातों का बहुत अधिक महत्व है। परन्तु आज के समाज में सभी मानवीय और पारिवारिक मूल्यों और कर्तव्यों को पीछे छोड़ते जा रहे हैं। आज का व्यक्ति स्वार्थी मनोवृति का हो गया है। वह केवल अपने मतलब के लिए ही लोगों से मिलता है। वह अपने अमीर रिश्तेदारों से रोज मिलना चाहता है परन्तु अपने गरीब रिश्तेदारों से कोसों दूर भागता है। ज्यादातर लोग केवल स्वार्थ के लिए ही रिश्ते निभाते हैं। रोज अखबारों और ख़बरों में सुनने को मिलता है कि जायदाद के लिए लोग अपनों की हत्या करने से भी नहीं झिझकते।

प्रश्न 9 - प्रश्न यदि आपके पास हरिहर काका जैसी हालत में कोई हो तो आप उसकी किस तरह मदद करेंगे?

उत्तर - यदि हमारे आस-पास हरिहर काका जैसी हालत में कोई व्यक्ति होगा तो हम उसकी मदद करने की पूरी कोशिश करेंगे। आज कल बहुत सी स्वयंसेवी संस्थाएँ हैं जो इस तरह से पीड़ित व्यक्तियों की मदद करती हैं, हम उनसे मदद लेंगे। उस व्यक्ति से खुद भी बात करेंगे और कारण का पता करने की कोशिश करेंगे। हम उस व्यक्ति को ख़ुशी से अपनी बाकी जिंदगी गुजारने के लिए प्रेरित करेंगे और अगर संभव हो तो उसके परिवार वालो से भी बात करके उनके बिगड़े हुए रिश्तों को सुधारने का प्रयास करेंगे।

प्रश्न 10 - हरिहर काका के गाँव में यदि मीडिया की पहुँच होती तो उनकी क्या स्थिति होती? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर - हरिहर काका के गाँव में यदि मीडिया की पहुँच होती तो शायद उनकी इतनी खराब हालत नहीं होती। सबकी पोल खुल जाती, मिडिया हरिहर काका के साथ हुए अत्याचारों को सभी के

सामने लाती। वे लोग जो बेसहारा बुजुर्गों पर अत्याचार करते हैं, उनकी संपत्ति को हड़पने के लिए किसी भी हद तक चले जाते हैं और यहाँ तक की उन्हें दो वक्त का खाना भी नहीं देते, उन लोगों को सामने लाकर मीडिया उन्हें सजा दिलवाने के लिए सबूतों को इकठ्ठा कर सकता है|